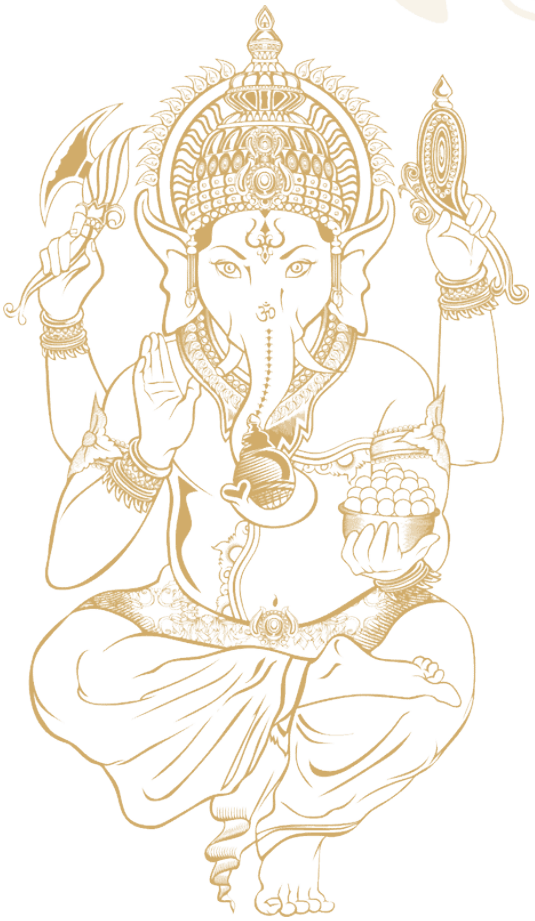

Mr.Rahul Mishra

07 Apr 1994

07:17 AM

Mau

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119324201**

तिथि 07/04/1994 **समय** 07:17:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Mau **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:46:51
अक्षांश 25:57:00 उत्तर **रेखांश** 83:33:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:04:12 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	20:21:38 घं	गण	राक्षस
वेलान्तर	00:02:15 घं	योनि	अश्व
सूर्योदय	05:41:32 घं	नाड़ी	आद्य
सूर्यास्त	18:15:00 घं	वर्ण	शूद्र
चैत्रादि संवत	2050	वश्य	मानव
शक संवत	1915	वर्ग	मार्जार
मास	चैत्र	युँजा	अन्त्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	वायु
तिथि	12	जन्म नामाक्षर	गो-गोपाल
नक्षत्र	शतभिषा	पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
योग	शुभ	होरा	मंगल
करण	कौलव	चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी	
राहु 13वर्ष 9मा 18दि	
शनि	
24/01/2024	
24/01/2043	
शनि	27/01/2027
बुध	06/10/2029
केतु	15/11/2030
शुक्र	15/01/2034
सूर्य	28/12/2034
चन्द्र	28/07/2036
मंगल	06/09/2037
राहु	13/07/2040
गुरु	24/01/2043

योगिनी	
धान्या 2वर्ष 3मा 18दि	
संकटा	
25/07/2018	
25/07/2026	
संकटा	05/05/2020
मंगला	25/07/2020
पिंगला	03/01/2021
धान्या	04/09/2021
भ्रामरी	25/07/2022
भद्रिका	04/09/2023
उल्का	03/01/2025
सिद्धा	25/07/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			22:29:52	मेष	भरणी	3	शुक्र	शनि	---	0:00			
सूर्य			23:14:22	मीन	रेवती	2	बुध	चंद्र	मित्र राशि	1.43	आत्मा	पितृ	क्षेम
चंद्र			09:46:40	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	गुरु	सम राशि	0.99	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल			00:14:15	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	चंद्र	मित्र राशि	1.34	कलत्र	भ्रातृ	सम्पत
बुध			01:58:13	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	नीच राशि	0.92	ज्ञाति	ज्ञाति	सम्पत
गुरु	व		18:47:22	तुला	स्वाति	4	राहु	चंद्र	शत्रु राशि	0.95	अमात्य	धन	जन्म
शुक्र			12:42:37	मेष	अश्विनी	4	केतु	बुध	सम राशि	1.32	मातृ	कलत्र	प्रत्यारि
शनि			14:11:17	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	मूलत्रिकोण	1.36	भ्रातृ	आयु	जन्म
राहु	व		00:39:36	वृश्चिक	विशाखा	4	गुरु	मंगल	शत्रु राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु	व		00:39:36	वृष	कृतिका	2	सूर्य	राहु	सम राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

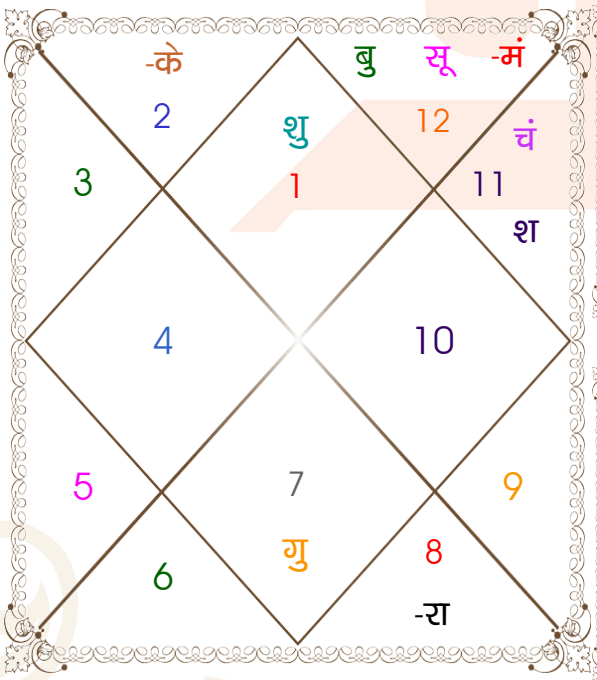

चन्द्र कुंडली

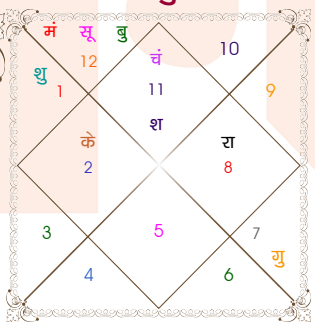

नवमांश कुंडली

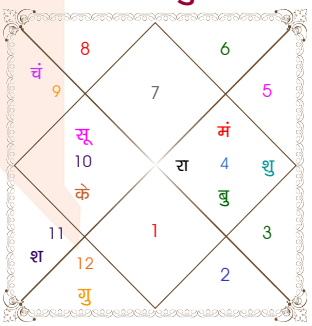

सर्वाष्टकवर्ग

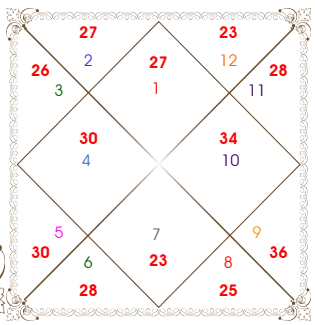

दशमांश कुंडली

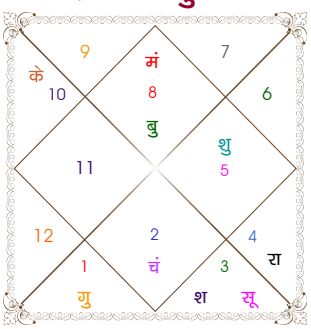

नक्षत्रफल

आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ग मार्जार, गण राक्षस, योनि अश्व, नाड़ी आद्य तथा वर्ण शूद्र होगा। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "गो" अक्षर से होगा यथा गोविन्द, गौतम आदि।

आप प्रायः ठण्ड से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे तथा इससे सहन करने में अपने को असमर्थ महसूस करेंगे। आप स्वभाव से ही साहसी होंगे तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए नित्य उद्यत रहेंगे। साथ ही आप में कठोरता की प्रभाव अधिक रहेगा। आप स्वभाव से ही अपने महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे इससे अन्य लोग भी आपसे प्रभावित होंगे एवं आपको हार्दिक सम्मान भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शत्रुओं को पराजित करने में भी आप हमेशा सफल रहेंगे।

शीतभीरूरतिसाहसी सदानिष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत्।
वैरिणामतिशयेन दारूणो वारूणोडनि यस्य स सम्भवं।।
जातकाभरणम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक शीत से डरने वाला, अत्यन्त साहसी, कठोर, चतुर तथा शत्रुओं का नाश करने में सफल होता है।

आप ज्योतिष शास्त्र में भी रूचिशील रहेंगे तथा इसका आपको अच्छा ज्ञान रहेगा। आप शान्त स्वभाव से युक्त रहेंगे तथा उग्रता का प्रदर्शन यदा कदा ही किया करेंगे। इसके अतिरिक्त अल्प मात्रा में भोजन करना आपको अत्यन्त ही प्रियकर लगेगा तथा अपनी इस प्रवृति का आप पूर्ण रूप से पालन करते रहेंगे।

कालज्ञः शततारकोद्भवनरः शान्तो ळल्पभुक् साहसी।।
जातक परिजातः

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य समय का ज्ञाता अर्थात् ज्योतिषी, शान्त स्वभाव युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला तथा पूर्ण रूप से साहसी होता है।

अतुल धन सम्पत्ति से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा समाज में एक धनाढ्य पुरूष के रूप में प्रसिद्ध भी रहेंगे परन्तु आपमें कृपणता का भाव भी विराजमान रहेगा। अतः धन का व्यय आप अल्प मात्रा में ही किया करेंगे तथा संचय अधिक मात्रा में रखेंगे। इसके साथ ही महिला वर्ग के प्रति आपका आकर्षण रहेगा एवं समयानुसार इनसे मित्रतापूर्ण संबंध भी आप स्थापित रखेंगे एवं उनकी सेवा आदि करने में भी तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप घर से दूर विदेश भ्रमण में भी अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे अथवा देशान्तर में निवास भी कर सकेंगे। साथ ही कामभावना की भी आप में प्रबलता रहेगी।

कृपणो धनपूर्णेः स्यात्परदारोपसेवकः।
जातः शतभिषायां च विदेशे कामुको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र का जातक कृपण, धन से पूर्ण, परस्त्री सेवी, विदेश में भ्रमण करने वाला तथा काम चेष्टा वाला होता है।

आप एक स्पष्ट बोलने वाले व्यक्ति होंगे तथा हमेशा जो कुछ भी कहना हो स्पष्ट रूप से कहेंगे। आपकी स्पष्टवादिता से कई लोग आपसे प्रसन्न होंगे तो अन्य कई असन्तुष्ट भी होंगे। साथ ही आप कई प्रकार के व्यसनों से भी युक्त रहेंगे तथा जीवन में इनका शौक करेंगे। आपकी प्रवृति दुराग्रह की भी रहेगी तथा जो आपको अच्छा लगेगा उसी को अन्य जनों पर थोपने की चेष्टा करेंगे अतः आपकी इस प्रवृति से कई अन्य लोग तथा संबंधी आपसे प्रायः अप्रसन्न ही रहेंगे।

स्पुटवाग्व्यसनी रिपुहा साहसिक शतभिषजि दुर्ग्राह्यः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्ट वक्ता, व्यसन प्रेमी, शत्रुओं को जीतने वाला, अविचार के कार्यों में प्रवृत तथा स्वतंत्र होता है।

आप स्वर्ण पाद में उत्पन्न हुए हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने के कारण जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। इस से उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा प्रायः धनाभाव से भी दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में सुख संसाधनों से भी हीन रहता है तथा सांसारिक कार्यों में अल्प मात्रा में सफलता प्राप्त होती है जिससे मन में तनाव आदि विद्य मान रहता है। इसके अतिरिक्त जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्यधिक परिश्रम के द्वारा अल्प सफलता अर्जित होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद अधिकांश शुभ फल ही प्रदान करेगा। अतः आप जीवन में समस्त सुख संसाधनों वैभव ऐश्वर्य एवं धनादि से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करके समाज में एक धनाढ्य पुरूष के रूप में प्रख्यात रहेंगे। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही वाहनादि सुखों से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप सद्गुणों से सर्वथा सम्पन्न रहेंगे। आपकी पत्नी भी सुन्दर सुशील एवं गुणवान होगी तथा आपके सेवकगण भी ईमानदार रहेंगे। साथ ही आप के लाभ मार्ग भी हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आप दीर्घायु होंगे एवं शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेंगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि का भी आप पूर्ण रूप से सुख प्राप्त करेंगे।

कुम्भ राशि में जन्म होने के कारण आपकी नासिका ऊंची होगी तथा मुख एवं मस्तक विस्तृत आकार के रहेंगे। साथ ही हाथ, पैर एवं कमर में भी स्थूलता रहेगी। आपके शरीर में कोमलता अल्प मात्रा में विद्यमान रहेगी तथा सौन्दर्य पूर्ण रूप से आकर्षक एवं दर्शनीय

रहेगा। साथ ही विद्रोह करने का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा एवं अवसरानुकूल इस भाव का आप प्रदर्शन भी करेंगे। साथ ही उग्रता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा। आप में धार्मिकता का भाव भी विद्यमान रहेगा आप कभी कभी दुष्टता का भी प्रदर्शन करेंगे एवं आलसपन भी आप में रहेगा। चित्रकारी के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेगी एवं इसमें विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त आप समय समय पर मानसिक कष्टानुभूति से भी व्याकुल रहेंगे।

उद्धोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

आपको नाना प्रकार के शास्त्रों का अच्छा ज्ञान रहेगा अतः एक विद्वान के रूप में आप समाज में आदरणीय रहेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने में भी आप प्रवीण रहेंगे। आप का स्वभाव शान्त होगा तथा उग्रता का भाव आप में यदा कदा ही दृष्टिगोचर होगा। साथ ही आप शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त करने में प्रायः सफल रहेंगे तथा वे आपसे अत्यन्त ही भयभीत तथा प्रभावित रहेंगे।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप गुप्त रूप से कार्यों को करने वाले होंगे या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इन कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आप स्वभाव से ही यात्रा तथा भ्रमण करने में विशेष रूचि रखेंगे तथा अपना अधिकांश समय इसी पर व्यतीत भी करेंगे। धन के प्रति आप में लोलुपता रहेगी तथा अन्य जनों के धन को प्राप्त करने की इच्छा भी आप मन में रखेंगे तथा इसके लिए स्वयं भी प्रयत्नशील रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति विषम रहेगी एवं इसमें प्रायः क्षय वृद्धि होती रहेगी। साथ ही सुगन्धित द्रव्यों का अनुलेपन करने तथा पुष्पों के प्रति भी आपके मन में आसक्ति रहेगी।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप एक श्रेष्ठ विद्वान होंगे तथा समाज में सर्वत्र आपका यश रहेगा लेकिन अन्य विद्वान जनों को आप यथोचित सम्मान प्रदान नहीं करेंगे इससे लोगों में आपके प्रति सम्मान की भावना में अल्पता आएगी। साथ ही स्वभाव में भी शिष्टता का भाव भी मध्यम रूप से विद्य मान रहेगा

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

आप जीवन में सर्वत्र विजय तथा सफलता अर्जित करते रहेंगे तथा सदाचारी जीवन व्यतीत करेंगे। आपका आचरण अन्य जनों के लिए उदाहरण के रूप में अनुकरणनीय रहेगा। धनवैभव से भी आप युक्त रहेंगे। गुरूजनों के प्रति आप के मन में असीम श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी निस्वार्थ सेवा तथा सहायता के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। महिलाओं के मध्य भी आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे। आप के परिवार के सदस्यों की संख्या भी अधिक होगी तथा जाति एवं वर्ग के लोगों के कल्याण के कार्यों के लिए आप सर्वदा तत्पर एवं प्रयत्नशील रहेंगे अतः इसके मध्य आप पूर्ण आदरणीय तथा सम्माननीय रहेंगे। इसके अतिरिक्त सर्वप्रकार से आप गुणवान रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक जीवन यापन करेंगे।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरूभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपकी गर्दन दीर्घाकृति की होगी एवं नसे भी शरीर से बाहर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होगी। महिलावर्ग से भी आपके मैत्री पूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे एवं मित्रों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा एवं प्रेम का भाव रहेगा तथा उनके सहयोग के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ळध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आप में प्रारम्भ से ही दानशीलता की प्रवृति रहेगी अतः समय समय पर आप दीन दुःखियों के प्रति अपनी इस प्रवृति का यथा शक्ति अनुपालन करते रहेंगे। साथ ही अन्य जनों के कल्याण कारी कार्यों में भी आप नित्य अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप अन्य जनों के उपकार को स्वीकार करके तथा उनके प्रति कृतज्ञता का भाव अर्पण करके अपने सामाजिक सम्मान में वृद्धि करेंगे। साथ ही जीवन में विभिन्न प्रकार के वाहन साधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपकी आखों की सुन्दरता दर्शनीय होगी तथा बुद्धि भी सरल ही रहेगी तथा किसी को भी आप धोखा देने का प्रयत्न नही करेंगे। इस प्रकार अपने स्नेह शील व्यवहार तथा सत्कार्यों से आप समाज के सभी वर्गो में लोकप्रिय रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपने बाहुबल से धनार्जन करेंगे तथा साहस पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करके सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।

शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी अधिक मात्रा में बोलने वाले होंगे। आपमें करुणा के भाव की रहेगी परन्तु साहसी स्वभाव 9होने के कारण अपने अधिकांश कार्यों को साहस पूर्वक सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। आप में क्रोध की भी प्रवलता रहेगी एवं छोटी छोटी बातों में आप सहसा ही उत्तेजित हो जाया करेंगे। इसके साथ ही अन्य जनों से आपका परस्पर विवाद भी उत्पन्न होता रहेगा। लेकिन शारीरिक बल की आप में कमी नहीं रहेगी तथा इससे आप हमेशा युक्त रहेंगे।

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से व्याकुलता की अनुभूति भी कर सकते हैं। साथ ही आप का शारीरिक सौन्दर्य में कामान्यतया रहेगा तथा कभी कभी आप अपने सम्भाषण में कटु शब्दों का भी प्रयोग करेंगे जिससे अन्य जन आपसे प्रायः ही रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

अश्व योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्रता प्रिय व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्यों को बिना किसी हस्तक्षेप से स्वछन्दता पूर्वक सम्पन्न करना पसन्द करेंगे। आप सर्वप्रकार से गुणवान रहेंगे। आप तेजस्वी पुरूष होंगे एवं आपकी तेजस्विता से सभी लोग आपसे प्रायः प्रभाति रहेंगे। इसके साथ ही वीणा या अन्य संगीत यंत्रो को बजाने में भी आप प्रवीणता को प्राप्त होंगे। साथ ही आप अपने कार्यों को पूर्ण ईमानदारी से सम्पन्न करेंगे तथा जहां भी आप कार्य करेंगे लोग आंख मूंद कर आप पर विश्वास करेंगे। अतः अपने कार्य क्षेत्र में आप एक आदरणीय पुरूष होंगे।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती

रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्दा नक्षत्र, गंडयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा प्रायः अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्दा नक्षत्र, गंड योग तथा वणिजकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याज्य रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य

के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं या महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐस, समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, पंच धातु, लोहा, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थो को दान करना चाहिए एवं शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शांति प्राप्त होगी एवं अन्य अशुभ फलों का प्रभाव नष्ट होकर सर्वत्र शुभ फल प्राप्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।